# तृतीय अध्याय

## सूर्यबाला के उपन्यासों का मूल्यांकन

### 3.0 सूर्यबाला के उपन्यासों का मूल्यांकन:

80 के दशक में सूर्यबाला का नाम हिंदी साहित्य में बड़े आदर के साथ लिया जाता है और हम यह कहें कि हम इस सदी में सूर्यबाला के उपन्यासों की चर्चा ना करें तो कुछ अधूरा छूट जाएगा । ऐसा लगेगा सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों में समाज में व्याप्त समस्याओं को यथार्थ के धरातल पर प्रेषित किया है। जैसे समाज में परिवर्तन होता गया वैसा परिवर्तन स्त्रियों के जीवन में भी अति आवश्यक है। उनके द्वारा रचित उपन्यासों की प्रमुख नायिकाएँ कमजोर नहीं है सूर्यबाला की सारी नायिकाएँ यथार्थ के धरातल पर अपने आप को एक मजबूत स्त्री पात्र के रूप में आलेखित करती है। उपन्यासों में मानसिक और यथार्थ के धरातल पर प्रेम के बदले परिवेश को भी सूर्यबाला ने अपने पात्रों के माध्यम से इंगित किया है ऐसा लगता है कि सूर्यबाला ने स्वयं अपने पात्रों के दुःख पीड़ा यातनाओं / यंत्रणाओं को सहा है और समझा है और इसी वजह से सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों में इतना सशक्त और प्रखर लेखन का परिचय दिया हैं। सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों के माध्यम से आधुनिकता और परंपरा वादी द्वंद्व को दर्शाया है।

समकालीन उपन्यास रचनाकारों में ऐसे प्रखर रचनाओं को प्रस्तुत करने वाली लेखिकाओं में सूर्यबाला का नाम अत्यंत आदर भाव से लिया जाता है।सूर्यबाला ने हिंदी साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाई हैं सूर्यबाला के उपन्यासों में (1) सुबह के इंतजार तक,(2) अग्निपंख (3) दीक्षांत और (4) मेरे संधिपत्र (5) यामिनी कथा का समावेश होता है। इन उपन्यासों का मूल्यांकन करना मेरा एकमात्र उद्देश्य है जो मैं तृतीय अध्याय के अंतर्गत मैं अपना अथक प्रयास करूंगी।

## 3.1 अग्निपंखी: (दो लघु उपन्यास)

सूर्यबाला के द्वारा रचित उपन्यास अग्निपंखी में दो लघु उपन्यासों का समावेश किया गया है। प्रथम उपन्यास 'अग्नि पंखी 'और द्वितीय 'सुबह के इंतजार तक' दोनों उपन्यास सामाजिक उपन्यासों की श्रेणी में आते हैं अगली पंक्ति में आत्मअभिमानी जयशंकर को शहर के मशीनी जीवन में माँ व पत्नी के साथ आर्थिक चुनौतियों तथा अभाव से जूझते हुए दिखाया गया है और दूसरा उपन्यास 'सुबह के इंतजार तक एक ऐसी युवती के संघर्ष की कथा है।जिसका परिवार आर्थिक रूप से इतना समर्थ भी नहीं है कि जवान बेटी का ब्याह करवा सके।अतः वह कैसे स्वयं को और अपने परिवार को अपनी सारी परिस्थितियों से बढ़कर एक सम्मानजनक स्तर पर ले जाती है।

### 3.1.1 अग्निपंखी: उपन्यास

ग्रंथ अकादमी दिल्ली से प्रकाशित 'अग्निपंखी' उपन्यास एक लघु उपन्यास की श्रेणी में आता है।'अग्निपंखी' हमारे गाँव की अभिशप्त पीढ़ी की कथा है जो अपने मूल वास्तविक रूप को खो चुकी है और जीवन की विभिन्न विषम परिस्थितियों से जूझ रही है। कहानी का मुख्य पात्र जय शंकर के पिता का साया उसके बचपन में ही उठ जाता है।पिता पटवारी थे तथा उनके मृत्यु के पश्चात जय शंकर की माँ उसके पिता का सपना पूरा करने के लिए अपने बेटे की पढ़ाई लिखाई और वह एक सफल व्यक्ति बने इसके लिए वह जीवन पर्यंत हर संभव प्रयत्न करती है उसके चाचा- ताऊ चाचियो के तीखे व्यंग्य भरे शब्दों को सुनते हुए कई वर्षों की पढ़ाई -लिखाई के बाद भी जब शहर में उसे नौकरी प्राप्त करने में मुश्किलें उत्पन्न होती है। तब पहले से अपने अंदर सहमा सा रहने वाला जयशंकर और चिड़चिड़ा स्वभाव का हो जाता है और इसी के बीच एक दिन वह घर छोड़कर मायानगरी मुंबई की राह पकड़ लेता है जिस शहर में खाना-पीना पहनने के लिए कपड़ा मिलना आसान है परंतु जहाँ रास्ते पर भी रात काटने पर वहाँ के गुंडे बदमाशों को वसूली देनी पड़ती है वहाँ रोजगार प्राप्त करने वालों

और बेरोजगार को रहने के मामले में हालात समान हैं ऐसे ही उन्हें फुटपाथ पर अपना रैन बसेरा बनाना पड़ता है । उसमें भी बेरोजगारों को तो इसकी भी कीमत चुकानी पड़ती है तब जाकर कहीं वह लोग फुटपाथ पर ही सही चैन की नींद सो सकते हैं ।इस समस्या से निजात पाने के लिए शंकर जी तोड़ मेहनत करता है और रात को वॉचमैन की नौकरी अपना लेता है। सूर्यबाला ने इस समस्या का वर्णन भी अपने अनोखे अंदाज में ही बयान किया है।

"उसके सामने विकल्प एक ही था-खाए या सोए और भूखे पेट नींद भी भला कहाँ आती है,इसलिए उसने पेट में अन्न डाल, जागना पसंद किया।"[1]

समय के थोड़े प्रसार होने के बाद जयशंकर को मिल में नौकरी प्राप्त हो जाती है और एक झोपड़पट्टी में रहने के लिए घर मिल जाता है थोड़े दिन कमाई करके डेढ़ साल के पश्चात वह अपने गाँव लौटता है पूरे तड़क-भड़क और दिखावे के साथ और वास्तविकता से परे हटकर अपने आप को बहुत छन् जीवन जीने को मजबूर हो जाता है और अब उस विच्छृन्न जीवन के भीतर वह अपनी खुशी मनाता है। थोड़े दिनों के पश्चात उसके विवाह करवाया जाता है वह अपनी धर्म पत्नी के साथ पहले की अपेक्षा थोड़ा सुखमय जीवन यापन करता है।

गाँव में बसर करने वाला जय शंकर की माँ भी गाँव के अन्य लोगों की तरह ही सोचती है कि जयशंकर मुंबई जाकर किसी बड़ी नौकरी को लगा है और अब उसकी परिस्थिति पहले से कहीं ज्यादा बेहतर है।गाँव में अपनी जेठानी देवरानी के घर में ताने सुन- सुन कर अब जयशंकर की माँ ऊब जाती हैं।अब उसके मन में अपने बहू और बेटे के साथ शहर में जाकर उनके साथ रहने की इच्छा जागृत होती है कई बार जयशंकर अपनी माँ को शहर ना ले जाने के लिए टालमटोल करता रहता है मगर एक बार उसकी माँ ने ऐसी जिद पकड़ी कि उसे अपनी माँ को मुंबई साथ ले जाना ही पड़ा। मुंबई जैसे शहर में जयशंकर और उसकी पत्नी के लिए ही एक कोठरी में रहना मुश्किल होता था वहाँ अब माँ के

आज जाने के और भी समस्याओं का सामना पति-पत्नी को करना पड़ रहा है माँ मुंबई आकर बेटे की हरी हालत देखकर और भी खिन्न हो जाती है

इस उपन्यास में दूसरी व्यथा परिवार जनों द्वारा पाली गई भ्रामक उम्मीदों को लेकर हैं। गाँव -गवाई के संयुक्त कुटुंबी सदैव यही समझते हैं कि जयशंकर शहर में पैसे में ऐश करता है और उनके लिए 'यह थेष्ट 'नहीं भेज रहा स्वयं जयशंकर ने उन्हें इस भ्रम में ही रहने देता है, अपनी फटेहाल माली हालत को उजागर नहीं करता।

उपन्यास का उत्तरार्ध् अत्यंत ही दुःखों से भरा हुआ है जो पाठकों की सहानुभूति को जयशंकर से हटाकर जय शंकर की माँ की दयनीय अवस्था पर केंद्रित हो जाता है ।जो गाँव में अपने परिवार के लोगों को अनदेखा कर उनकी अवहेलना करके जयशंकर के शहरी परस्थिति से अवगत ना होने के कारण गाँव से लेकर शहर तक सारी जिंदगी परिजनों के ताने सुन-सुनकर और शहर में बेटे के द्वारा की गई अवहेलना बर्दाश्त नहीं कर पाती और अंत में मानसिक बीमारी का शिकार हो जाती है। ऐसे गंभीर यथार्थवादी विषय को केंद्र में स्थान देकर सूर्यबालाजी ने अपनी लेखनी का सुंदर जादू चलाया है जो पाठक को कथानक से अंत तक जोड़े रखता है।

**3.1.2 पात्र परिचय**:

'अग्निपंख'उपन्यास का मुख्य नायक जयशंकर है और मुख्य नायिका जय शंकर की माँ है जिनका नाम जीजी है। गौण पात्र के अंतर्गत पुरुष पात्रों में बड़े बाबू, रामकिशोर , श्यामकिशोर, शेष त्रिलोकी ठाकुर,और महेश है। स्त्री गौण पात्रों में बड़को, छोटको, जयशंकर की बीवी आदि का सहयोग उपन्यास की कथावस्तु को आगे स्तर पर ले जाने के लिए होता है।

**3.1.3 जयशंकर:**

अग्निपंखी में प्रमुख पात्र के रूप में हम जयशंकर को देखते हैं जो दूसरे पात्रों की अपेक्षा अधिक पढ़ा लिखा है और अपने गाँव में कुछ सालों से बेरोजगार

घूम रहा है जब बाबूजी एक दिन जयशंकर को खेतों में काम करने को कहते हैं तो काम करने के बजाय जयशंकर अपना बक्सा उठाकर शहर की ओर चल पड़ता है वहाँ जाकर वह नौकरी करने लगता है।उसे कई दिनों तक शहर में रहने का ठिकाना नहीं मिलता उसके लिए वह रात को गार्ड की और नौकरी कर लेता है शहर आकर उसके रहन सहन में भी बदलाव आ जाता है।जब एक दिन वह शहर से गाँव आता है तो गाँव के लोग उसका रहन-सहन देखकर यह सोच लेते हैं कि अब जयशंकर शहर में जाकर बड़ा अफसर बन गए हैं गाँव की सारी औरतें जय शंकर की माँ से कहती है कि 'अब जीजी अफसर की माँ बन गई है'जीजी बेटे के साथ शहर जाने की लालसा रखती है परंतु जयशंकर बार-बार इस बात को टाल देता है।एक दिन उसे जीजी की हट के आगे झुकना पड़ता है।शहर में जब भी जीजी जाती है तब जय शंकर की बीवी जिस प्रकार जीजी का स्वागत करती है वह जीजी को पसंद नहीं आता उसे जीजी मन में सोचती है कि इससे अच्छा वह अपने गाँव में ही रहती--"गाँव देता है और शहर चूमता है"जय शंकर की छोटी-सी कोठरी में जीजी का दम घुटने लगता है वह गाँव वापस लौट कर आती है और आखरी में पागल और अस्थिर मानसिकता लेकर शहर जयशंकर के पास वापस लौट आती है। जयशंकर अपनी माँ के साथ तू तू मैं मैं करने लग जाता है अपने माँ को लेकर वह परेशान रहने लगता है और इसी वजह से वह चिड़चिड़ा हो जाता है गाँव जाकर अपनी जमीन के लिए वह रामकिशोर और श्याम किशोर दोनों के साथ झगड़ा करता है।सूर्यबाला ने अपने उपन्यास में जयशंकर के रूप में एक स्वार्थी, मुंहफट, तेज दिमाग और मानसिक रूप से बिखरे हुए व्यक्तित्व का चित्रण किया है।

**3.1.4 जीजी:**

सूर्यबाला के उपन्यास में जीजी ऐसा पात्र है जो उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक दु:ख,दर्द,पीड़ा, तानों से अपना जीवन यापन करती है उसका एक ही बेटा है जिसका नाम जयशंकर है जो घुमक्कड़,स्वार्थी ,मुंहफट है। जीजी गाँव

में रहकर भी घरवालों के ताने सुनती रहती हैं क्योंकि जय शंकर के पिता की मृत्यु के बाद उसका जीवन और भी मुश्किलों से भरा हो गया था जब जयशंकर पढ़ लिखकर शहर नौकरी करने जाता है तो वह सोचती है कि अब उसका बेटा बड़ा अफसर बन गया है अब उसके दुखों का अंत हो जाएगा लेकिन होता इसके बिल्कुल विपरीत है वह शहर तो अपने बेटे के साथ जिद करके जाती हैं परंतु उस छोटी-सी कोठरी में उस का दम घुटता है फिर गाँव चली जाती है।फिर गाँव से पागल और मानसिक संतुलन खो चुकी जीजी जयशंकर के साथ अपना करुणामय जीवन जीती है, और आखिर में जीजी का इसी दारुण और करुणामयी अवस्था में मृत्यु हो जाती है। जीजी के पात्र के द्वारा सूर्यबाला ने हमें जीजी के संघर्ष भरे जीवन और उसके जीवन का करुणामय अंत, उसके द्वारा दु:खों का सामना करना और अंत में वह अपने दु :खों के साथ ही लड़ते-लड़ते मृत्यु तक का सफ़र दर्शाया है, जो पाठकों के हृदय को द्रवित कर देता हैं।

**3.1.5 संवाद:**

प्रस्तुत उपन्यास अग्निपंखी में संवाद इतने प्रभावशाली हैं जो पाठकों के मानस पटल पर एक गहरी छाप छोड़ने वाले हैं जो पाठक के अंतर्मन को झिंझोड़ देते हैं और इस उपन्यास में गाँव की बोली जाने वाली भाषा का प्रयोग हुआ है। गाँव के देहाती लोगों की भाषा प्रयोग हुआ है जो पाठकों में कुतूहल निर्माण करता है, जो पाठकों को उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक पकड़ कर रखते हैं। कहीं-कहीं पर संवादों में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है । कुछ संवाद यहाँ प्रस्तुत है:- जो मन को छू जाते हैं।

जय शंकर की माँ जीजी लोगों के संवाद सुनते हुए--

"तुमसे भी नहीं बताया कि आखिर जाता कहाँ है ?

अरे हम लाख पराए हो, पर महतारी तो सगी थी।

तुम्हारे भी किए का पोस नहीं माना?

धिक रे औलाद!

एक दर्द  बिलबिलाता है

एक सन्नाटा विलाप करता है।"[2]

जयशंकर अपनी माँ को कहते हुए-:"यह शहर है शहर गाँव नहीं कि जहाँ हुआ लोट लिए बैठ गए। शहर का कायदा रहते रहते  सीखोगी सीधे चली आ रही हों देहात से ना कुछ जानो ना बुझो और मेरे दिमाग की दवा बता रही हो। पता नहीं और कितने दिन तुम्हारे साथ सिर खपाना  पड़ेगा।"[3]

मां जय शंकर को कहते हुए-: "यह बेगाना अजनबी शहर इसका इतना अपना कब से हो गया और अपना सब कुछ बेगाना"[4]

"सहर से इस जिंदगी का ठिकाना नहीं लगने वाला है गाँव- घर देता है शहर चूसता है।"[5]

डॉक्टर जयशंकर से कहते हुए आखिर में: "पता नहीं किस की आशंका? मृत्यु की? या जीवन की?"[6]

इस प्रकार की संवाद उपन्यास को एक सफल उपन्यास बनाते हैं क्योंकि ऐसे संवाद मानव मन अर्थात पाठक के मन पर गहरी छाप छोड़ते हैं। इस प्रकार सूर्यबाला  ने संवादों का उपन्यास के अनुसार योग्य स्थान दिया है।

### 3.1.6 देश काल और वातावरण:

उपन्यास की कहानी भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई है। भारत देश के आजाद होने के बाद कि देश की सामाजिक ,आर्थिक स्थिति को सूर्यबाला ने प्रस्तुत किया है। आजादी के पश्चात लोगों के जीवन में क्या परिर्वतन होता है और गाँव और शहरी जीवन  के रहनसहन में विभिन्न- अस्तित्व एवं पहलुओं को दर्शाया है।वातावरण गाँव और शहरी जीवन से जुड़ा हुआ है।

### 3.1.7 भाषा शैली:

लघु उपन्यास 'अग्निपंखी' की भाषा शैली में हमें विविधता देखने को मिलती है भाषा शैली के माध्यम से गाँव की झांकी ,संस्कृति ,रीति रिवाज और संस्कृति से जुड़े रखने का भरपूर प्रयास सूर्यबाला ने किया है। गाँव के देहाती भाषा से

उपन्यास का आरंभ होता है और भाषा में थोड़ी-थोड़ी जगहों पर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। भाषा शैली पात्रों के अनुरूप हैं। उपन्यास की भाषा पाठकों को ऊबने नहीं देती। सहर, महतारी, पोस जैसे अलग ध्वनि और खनक उत्पन्न करने वाले  शब्दों प्रयोग सूर्यबाला ने किया है। भाषा शैली सामान्य मनुष्यके बोलचाल, रोजमर्रा जीवन से जुड़ी हुई है। भाषा शैली के माध्यम से भाव पक्ष को कहीं संवादों में दर्शाया गया है जो सीधे पाठक के मानसपटल पर असर करती है।

**3.1.8 उद्देश्य** :

सूर्यबाला का लघु उपन्यास 'अग्निपंख' की शहरी और ग्रामीण जीवन की समस्याओं को उजागर करता है। शहरों में निवास स्थान की समस्या,बेरोजगारी की समस्या,मानसिक समस्या, आर्थिक समस्या और स्त्री की वेदना को प्रकट करने वाला यह लघु उपन्यास हैं शहरी और ग्रामीण लोगों के व्यवहार, भावनाओं,मानसिक स्थिति में कितना अंतर होता है यह बताने का प्रयत्न भी सूर्यबाला  ने किया है। तथा ऐसे शहर में बसने वाले लोगों के मानवीय भावनाओ का  कैसे धीरे-धीरे पतन तो होता जाता है इस पहलू को उजागर किया है।

## 3.2 सुबह के इंतजार तक:( द्वितीय लघु उपन्यास)

सूर्यबाला द्वारा रचित एक लघु उपन्यास है ।यह लघु उपन्यास एक ऐसी युवती की दयनीय और दिल को दहला देने वाली लड़की की आत्मगाथा है जिसको परिवार की माली हालात ठीक नहीं है उसके परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय है। यह आज के माध्यम वर्ग की नैतिकता की भी समस्या है, जहाँ देखा जाए तो युवती के परिवार का हाल निम्न मध्यम वर्ग से भी दयनीय ,दु:खी और बद से बदतर होने के बावजूद भी समाज को दिखाने के लिए अपने आप को इज्जत दार और सफल दिखाने का असफल प्रयास करते हैं।एक दिन मनु का भाई बुलू पाठशाला से घर लौटकर चाय के साथ रोटी लेकर नाश्ता करने बैठता है। थोड़ी देर तो शांति रहती है फिर बुलु के मां-बाप उसे कहते हैं कि पढ़ाई

लिखाई में आज के आधुनिक युग में कुछ नहीं रखा । मन में बालू आशंकित होता है और रोटी खाते खाते उसका हाथ अपने आप रुक जाता है, और वह अपने माता-पिता से अनुरोध करता है कि कम से कम लोग उसे दसवीं की परीक्षा तो देने देते मगर उसके माता-पिता तो पहले से ही उसका भविष्य तय कर चुके थे । उन्होंने किसी गैरेज वाले के यहाँ उसके काम की बात निश्चित कर चुके हैं और वह बुलू से कहते हैं कि "दसवीं की परीक्षा तो वह बाद में भी दे सकता है गैरेज में काम करके उसे गैरेज में ही रहने का बंदोबस्त कर दिया गया था" यह सुनकर वह दंग रह जाता है अपनी बहन मानू के शब्दों में कहें तो अत्यंत दु:खद और मार्मिक है यह उपन्यास जिसे सूर्यबाला ने अपनी संवेदनात्मक शैली में इस उपन्यास में बहुत मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किया है।

थोड़े दिनों बाद मानु के रिश्ते में मामा-मामी उनसे मिलने आते हैं।भाई के चले जाने के बाद वैसे भी मानू उदास थी जब मामी माँ से कहती है कि 'लड़की को वह उनके पास भेज दें ताकि उनके वहाँ रहकर वह थोड़ा घर का काम काज सीख लेगी' और उसके बाद उसकी शादी की कोशिश भी मामी के द्वारा ही की जाएगी माँ युवती को समझा-बुझाकर मामा मामी के साथ रवाना कर देती हैं मामा का एक फैक्टरी में सुपरवाइजर का काम करते थे वह ऊपर की कमाई करने के लिए अपनी सेटिंग ऊपर के ठेकेदारों से रखा करते थे। कभी-कभी कर्मचारी मिट्टी का तेल, शक्कर या कोयले जैसी चीजें घर पहुँचा जाते थे एक ऐसा ही दिन था जब मामा मामी के घर पर कोई नहीं था उन्हीं में से एक दबंग और हट्टा-कट्टा शख्स घर में कुछ पहुंचाने के बहाने आता है और युवती के साथ शारीरिक दुष्कर्म करता है उसके पश्चात मामा-मामी लड़की को उसके घर वापस भेज देते हैं मां-बाप की परिस्थिति और उन्हें लगातार चिंता के गरकाव में देखते हुए मानू अपने भाई के साथ घर छोड़ने का निश्चय कर लेती हैं। इस निश्चय के पीछे एक और महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि वह अपने भाई बालू की पढ़ाई फिर

से शुरू करवाना चाहती थी वह अपने भाई को एक सफल व्यक्तित्व होते हुए देखना चाहती थी।

इसके बाद भाई-बहन दोनों एक नए जीवन संघर्ष में आगे बढ़ने और अपने आपको जीवन जीने में व्यस्त रखते हैं बहन भाई का एडमिशन पाठशाला में करवाती है और लोगों के घर उनके घरेलू कामकाज करके अपना जीवन यापन करते हुए नई कोशिशें करते हैं ।भाई-बहन को इस कठिन समय में उन्हें ऐसे भी पात्र मिलते हैं जो उनके इस कठिन समय और सफर में अपनी इंसानियत को जिंदा रखते हुए अपने भीतर के इंसान को जीवित रखते हैं और जो असहाय, दयनीय लोगों की हर संभव सहायता और मार्गदर्शन करते हुए आनंद प्राप्त करते हैं।

उपन्यास में थोड़ा आगे जाने के पश्चात कुछ सुखद और अधिकतर दुःखद प्रसंगों का वर्णन बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रायोजित किया गया है सूर्यबाला जी ने आखिरी पोस्टों पर बड़े तार्किक ढंग से दुखांत को थोड़ा बेहतर और सराहनीय बनाने का प्रयास किया है ऐसी निराशा ,अवसाद उत्पन्न करने वाले कथानक को पठनीय बनाना उनके हाथ में लेखन से ही संभव हो पाता है। आखिर में पात्र की यह पंक्तियाँ आपको पीड़ा  पहुंचा जाती है:-

'फिर से सुन अपनी पीड़ा भूल जाने का महामंत्र तेरी यह दीदी बहुत बहादुरी से जिंदगी जी चुकी है।उसने सब कुछ स्वीकार कर लिया है इससे शायद समाज भी उसे सहज भाव से स्वीकारता चला गया'

आखिर में मानू कहती है:  'समाज मुझे स्वीकार है -यही तो मेरा विद्रोह की पीठिका का थी मेरा हठ था, मेरी उपलब्धि थी'[7]

मेरे मत से इस उपन्यास का बहुत ही करुणामय और दयनीय अंत हुआ है दूसरे उपन्यासों के मुकाबले दोबारा इस उपन्यास को पढ़ने के लिए हिम्मत और साहस की आवश्यकता होगी क्योंकि बेहद ही दुःखद अंत देखने को मिलता है। उपन्यास के अंत में जो लड़की समाज से और और उसके जीवन यात्रा में आने

वाली परिस्थितियों से लड़ती है उसका ही इतना करुणा भरा अंत बेहद दुःखदाई एवं दिल को दहला देने वाला है।

**3.2.1 पात्र परिचय:**

सूर्यबाला द्वारा रचित लघु उपन्यास 'सुबह के इंतजार तक' में मानूं मुख्य नायिका के रूप में उभरती है जो जीवन के अंत तक अपनी समस्याओं से लड़ती है दूसरा पात्र बुलु है जो उपन्यास में आखिर तक एक भाई का फर्ज निभाता है और अंत तक अपनी बहन मानू का साथ देता है तीसरा पात्र है काकी और अन्य कई गौण पात्रों का भी सहयोग मिलता हैं । जो उपन्यास को एक नया मोड़ देने में सहायता करते हैं।

**3.2.2 मानु:**

'सुबह के इंतजार तक' इस उपन्यास में सूर्यबाला ने एक बलात्कार से पीड़ित लड़की मानु का चरित्र चित्रण किया है मानु उपन्यास की मुख्य नायिका है।गरीब घर में जन्म होने के कारण शुरुआत से ही अपना जीवन आर्थिक संकटों से गुजारती है जिसके कारण जीवन बिताना मुश्किल हो जाता है मानु अपने भाई बालू से विशेष लगाव रखती है उसकी पढ़ाई के लिए लोगों के घर बर्तन मांजती है,ट्यूशन लेती है वह अपने भाई को पढ़ाने के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर देती है। वह अपने भाई बुलू को उसने एम.बी.बी.एस से डॉक्टर बलवीर वर्मा तक का सफर तय करवाती है। और अपने भाई का जीवन खुशियों से भर देती है मानु एक ऐसी लड़की है जो दुःख दर्द झेल कर भी अंत तक अपनी विजय की राह खुद बनाती हैं जो उपन्यास एक प्रेरणा स्त्रोत के रूप में देखा जा सकता है।

**3.2.3 बुलू:**

उपन्यास सुबह के इंतजार'तक में'बुलू का पात्र मानु के बाद दूसरा महत्त्वपूर्ण पात्र है जो कहानी को एक नया मोड़ देता है। बुलू की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण उसके मातापिता उसकी पढ़ाई छुड़ाकर उसे गैरेज - में काम करने को मजबूर कर देते हैं फिर भी बालू अपने परिवार की आर्थिक

रूप से मदद करने की कोशिश करता है। वह अपनी बड़ी बहन मानु के साथ हो रहे समाज के सामाजिक अन्याय को देखता है और उस से परेशान होकर दोनों भाई -बहन से नहीं  झेल पाते इस कारण भाई -बहन एक साथ अपने परिवार का त्याग कर देते हैं खेलने कूदने की उम्र में बालू एक बड़े बुजुर्ग की तरह अपनी बहन मानु की रक्षा करता है और आखिर में दोनों भाई -बहन मेहनत रंग लाती है बालू पढ़ाई-लिखाई करके एम.बी.बी.एस बनता है। इस तरह बालू शुरू से लेकर अंत तक मुख्य पात्र मानु की सहायता करता है।

**3.2.4 काकी**:

काकी के जवान बेटे की मृत्यु के पश्चात काकी अपना जीवन दूसरों की सहायता और मदद में गुजारती है। शंकर और माधुरी की सास लगती है काकी। मानू पर लगे कलंक से मानु को राहत और दिलासा देने का कार्य करती है। काकी मानु की वजह से जब काकी को गालियां सुनने मिलती है तब काकी उसे भी मुस्कुराते हुए  और हँसते मुँह से सहन कर लेती है।

**3.2.5 गौण पात्र:**

उपन्यास की कथा को आगे बढ़ाने के लिए अन्य कई पात्रों का भी सहारा सूर्यबाला ने इस लघु उपन्यास में लिया है। जैसे मानु के पिता, सुरेश मामी ,सालू राम ,सुबोधिनी, तिवारीन चाची, मानु की माँ ,गुसाई दादा जैसे पात्रों का परिचय मिलता है।यह सभी पात्र कथानक को बीच-बीच में आकर आगे बढ़ाते हैं पात्रों और चरित्र चित्रण के आधार पर सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यास के तत्व पर खरा उतरता है।

**3.2.6 संवाद:**

लघु उपन्यास के संवाद पाठकों के मन में जिज्ञासा  'सुबह के इंतजार तक' उत्पन्न करते हैं तथा पाठक को उपन्यास पढ़ने के लिए मजबूर करते हैं उपन्यास में ऐसे संवाद है जो पाठकों के दिलों में सीधा घर कर जाते हैं।

मानु के माँ के संबंधित संवाद -''पता नहीं यह माँ की कौन सी मजबूरी, झक या कमजोरी थी- जो हम नहीं थे वह दिखाना, जो घट रहा था उसे नकारना, जो सच था उसे झूठ साबित करने की कोशिश आखिर क्यों? यह प्रश्न पूछने लायक हमारी उम्र नहीं थी।'8

मामी मानु के माँ से संवाद करते हुए-"कुछ दिनों के लिए मेरे साथ कर दो नए तौरतरीके से -, उठना-बैठना पहनना -ओढ़ना सीखेगी गुण सहूरसीखेगी तो शादी में भी आसानी होगी।"[9]

मामी द्वारा माँ को समझाते हुए-"मन क्यों छोटा करती हों?अरे दुनिया बहुत आगे बढ़ गई हैं।किसी- ना -किसी को फसाऊंगी शादी के लिए कोशिश करूंगी कि कोई मेल का लड़का हो और बिना लेनदेन मामला तय हो जाए फिकर मत करना।"1[0]

मानु के साथ जब बलात्कार होने के बाद मामी के संवाद: "मैंने तो सोचा था सत्रह, अट्ठारह साल की है इतनी ना समझ नहीं होगी आने जाने वालों को ठीक से बर्ताव रखने को इसलिए कहा था कि रुपए पैसे का जोर नहीं। इसी तरह बात बन जाए .....किसीका मन आ जाए.....क्या जानती थी ऐसा कर बैठेगी।"[11]

"मैं तो भला सोच कर ही लाई। आजकल तो सब जगह इधर ऐसा ही देखती थी नहीं सोचा था नादानी कर बैठेगी।"[12]

### 3.2.7 देश काल:

सूर्यबाला ने अपने लघु उपन्यास 'सुबह के इंतजार तक' में शहरी और महानगरीय जीवन शैली के साथ-साथ शहरी और महानगरीय वातावरण को भी प्रसंगानुसार दर्शाया है।

### 3.2.8 भाषा शैली:

उपन्यास का कथानक भारत के एक शहरी जीवन से आरंभ होता है जहाँ के लोग अपनी ही आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों में उलझे हुए हैं।उपन्यास के पात्रों पर महानगरी विचारधारा का प्रभाव देखने को मिलता है उपन्यास में

सभी पात्रों को भाषा में शुद्ध भाषा का रूप देखने को मिलता है कहीं-कहीं पर उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का भी चयन किया गया है परंतु कथानक का सूत्र बीच में टूट गया हो ऐसा लगता है प्रस्तुत उपन्यास में संक्षिप्त रूप से कहा जाए तो भाषा शैली पात्रों के अनुरूप है।

### 3.2.9 उद्देश्य:

सूर्यबाला स्वयं एक स्त्री होने के कारण मानु की मन की पीड़ा को दर्शाने में उन्हें सफलता प्राप्त हुई है। परिवार की आर्थिक स्थिति इज्जतदार लोगों का जीवन कैसे होता है और कभी भी अपने ऊपर आने वाले संकटों से हार ना मानने वाली मानु का चरित्र चित्रण एक प्रेरणा स्त्रोत करने वाली आदर्श नारी का उदाहरण है। अपने उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत करने में सूर्यबाला में सफलता प्राप्त की है।

## 3.3 यामिनी कथा:

यह सूर्यबाला का प्रसिद्ध प्राप्त उपन्यास है इसकी भूमिका में चंद्रकांत बंदीवडेकर लिखते हैं "यामिनी कथा ने उनकी प्रतिष्ठा को औचित्य और सार्थकता ही प्रदान नहीं की उनके गौरव को भी स्थापित मान बढ़ाया है।"इस उपन्यास में सूर्यबाला ने यामिनी की जीवन यात्रा का वृत्तांत प्रस्तुत किया है।"[13]

सूर्यबाला हिंदी की एक प्रतिभावान कथा लेखिका है और यामिनी कथा उपन्यास ने उनके द्वारा रचित साहित्य में चार चाँद लगा दिए हैं।इस उपन्यास ने उनकी प्रतिष्ठा और सार्थकता को और बढ़ाया है उनके द्वारा रचित उपन्यासों में एक कलगी के समान है। मनुष्य के मानस को उसके समूचे जय रेशे-रेशे के साथ पकड़ने की और सुरंग की अतुल गहराई दिखाने की सूर्यबाला की यह कोशिश हिंदी कहानी के क्षेत्र में एक मानक है। इस उपन्यास के बल पर सूर्यबाला हिंदी के कुछ महत्त्वपूर्ण साहित्यकारो में आ गई है।

यामिनी एक संवेदनशील स्त्री की कहानी है जिसकी संवेदनाओं ने उसे जिंदगी जीने के लिए एक अनुभव प्रदान किया है अगर देखा जाए तो उसके

जीवन में सुख की संभावनाएं कम ही है परंतु उसके मानस पटल पर अंकित अनुभव युक्त एक दृश्य ने उसके समक्ष हमेशा यातना दुःख और पीड़ा का ही पहाड़ बिछाया है।उसकी ऐसी मन:स्थिति का असर हम पूरे उपन्यास पर देख सकते हैं। वह एक अथाह सागर का भँवर पार करना चाहती है यामिनी के अति संवेदनशील स्वभाव के कारण ही उसकी पीड़ा और वेदनाओं का अंत नहीं होता और इस वजह से उसकी किसी भी समस्या का कोई समाधान वह स्वयं खोज नहीं पाती क्योंकि वह अपने आप से समझौता तो करना चाहती है परंतु उसमें भी वह निष्फल रहती है। हर दिन उसकी पीड़ा दुःख वेदना में एक नया आयाम जुड़ जाता है। जिससे वह चाहते हुए भी निकल नहीं पाती ऐसा जीवन ही उसकी नियति बन गया है, ऐसा प्रतीत होता है ऐसा लगता है जैसे यामिनी जीवित रहेगी तब तक उसे इन यातनाओं का सामना करना पड़ेगा।

यामिनी के दु:ख का सबसे बड़ा कारण उसका प्रथम विवाह विच्छेद है। एक साधारण स्त्री को सुखों से गिरने के लिए यह जीवन अपर्याप्त नहीं है प्रथम विवाह में यामिनी को एक अच्छा घर, अच्छा कमाने वाला पति, जिस घर में पैसों की कोई कमी नहीं थी सुख सुविधाओं से संपन्न परिवार पति जहाजी होने के कारण जहाज पर ही अधिकतर यात्रा करता रहता था. परंतु छुट्टियों में लौटकर पत्नी की शारीरिक सुख को लेकर पूरी तृप्ति देता था। घर में एक सास थी जो कभी भी अपना का ढीलापन नहीं दिखाती थी परंतु इस सब से परे यामिनी केवल एक साधारण स्त्री की अपेक्षा अपने पति विश्वास से कुछ अतिरिक्त प्रेम और आत्मिक लगाव की भावना रखती थी लेकिन यामिनी के आत्मसमर्पण के पश्चात भी विश्वास उसे वह प्यार देने में असमर्थ था क्योंकि विश्वास ने यामिनी को कभी भी विशेष लगाव और सम्मान की नजर से कभी देखा ही नहीं था। इस संबंध में बदलाव तब आता है जब यामिनी अपने बेटे पुतुल को जन्म देती है और इसी कारण विश्वास जाने अनजाने में यामिनी की और थोड़ा झुकता चला जाता है और थोड़ा थोड़ा यामिनी के प्रति नरम पड़ जाता है।विश्वास पुतुल से लाड़ दुलार करता

है एक पिता वात्सल्य के अथाह सागर में डूबते-डूबते थोड़ा आदर सम्मान यामिनी को भी देने लगता है परंतु यामिनी का यह सुख नियति को देखा नहीं गया और इसके चलते विश्वास कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से ग्रसित हो जाता है। एक तरफ विश्वास का यामिनी के प्रति बदलता रूप और संवेदनाएँ दूसरा यामिनी की करुण संघर्ष में नियति की गाथा देखने को मिलती है। यामिनी के दुःख के अनेक स्तर है शुरुआत में विश्वास के साथ बिताए क्षणों की पीड़ा और तत्पश्चात पुतुल के जन्म के बाद थोड़ा विश्वास के साथ संघर्ष कम हुआ था कि वह उल्लास भी क्षणिक रहकर समाप्त होने वाला था विश्वास का यायावर जहाजी जीवन का आकर्षण और उसकी स्वतंत्रता का पूर्व पोषित उसकी सदा ही जीवन दृष्टि और उसका स्त्री को एक वस्तु के रूप में भोगने का असली स्वभाव बड़ी सूझबूझ के साथ व्यक्त किया गया है। सूर्यबाला ने विश्वास और यामिनी के संपूर्ण जीवन को प्रति प्रसंगों को अनुभव पूर्ण बना दिया है। विश्वास की पुतुल के प्रति बढ़ती वात्सल्य भावना के साथ यामिनी के प्रति अपराध बोध तज्जन्य आत्मग्लानि का संकेतात्मक प्रस्तुतीकरण किया गया है।जो संघर्ष यामिनी ने अपने पति की जान बचाने के लिए किया और किसी बिंदु पर अपने असफल संघर्ष की परिणति से रूबरू होते हुए भी वह अपनी मानसिक शांति के लिए अपने को पूर्णतः झोंक देती हैं।

यामिनी के यातनामय में जीवन का अंत विश्वास के दुनिया से चले जाने के पश्चात भी नहीं थमता उसके कठिन यात्रा फिर से प्रारंभ हो जाती है।विधवा हुई यामिनी हर दिशा से निर्धन होने के बाद केवल अपने बच्चे पुतुल के लिए समर्पित माँ की भाती अकेले ही संघर्ष करती है उसकी बिगड़ती आर्थिक परिस्थिति ,अकेलापन और अंधकारमय भविष्य के बीच उसे रोशनी की एक किरण के रूप में समझदार व्यक्तित्व के रूप में निखिल मिलता है  न हीं दोनों की मानसिकता तथा दोनों की स्थिति के पृथात्मक संदर्भ को कहीं भी उपेक्षित किया है।यामिनी और निखिल के भी सुखमय जीवन यापन नहीं कर पाते द्वितीय

विवाह के पश्चात यामिनी निखिल के बेटे चुनमुन की माँ बनती है उसके कारण यामिनी को और विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।यामिनी निखिल और चुनमुन तीनों पात्रों के बीच में अपने आप को उलझा लेती है। एक तरफ यामिनी की स्मृति में विश्वास बसा है दूसरी और पुतुल की तरफ उसका खिंचाव तीसरा उसकी आँखों के सामने नन्हा-सा चुनमुन है और एक तरफ अपने प्रथम विवाह की सुख की अपेक्षा लिए खड़ा निखिल है।इन्हीं के बीच में यामिनी तार-तार हो कर बिखर जाती है और इस परिस्थिति में से निकलने का उसके पास कोई समाधान नहीं है।विश्वास का और निखिल का अपना पूर्णत: अलग-अलग व्यक्तित्व था ,परंतु चुनमुन के कारण बनते बिगड़ते रिश्तो में थोड़ा- सा प्यार देखने को मिलता है जो उपन्यास को थोड़ा रिलीफ देता है।यामिनी को सदा अपने मानस पटल पर अपने आप से ही युद्ध करते देखा जा सकता है जो द्वेष, पीड़ा, वेदना हम यामिनी की में देखते हैं वह बया होकर उसके अपने अंतर्मन से निकलने वाली संवेदनाएँ है।यामिनी का जीवन एक प्रेयसी, पत्नी ,विधवा ,प्रथम पति से प्राप्त संतान तदुपरांत दूसरे विवाह का पति संतान इन सबके बीच उसे अपनी अलग-अलग भूमिकाएं अदा करनी पड़ती हैं। ऐसा लगता है यामिनी किसी युद्ध में लहूलुहान हुई योद्धा है जो अंत तक अपने आप से लड़ना चाहती हैं। पुतुल जैसे बड़ा होता है उसका अपने दिवंगत पिता के प्रति सम्मान और बढ़ने लगता है और वह अपनी शिक्षा के माध्यम से अपने ही पिता के व्यवसाय का चुनाव करता है और पुतुल घर छोड़ने का फैसला कर लेता है क्या पुतुल के जाने के पश्चात यामिनी को कुछ राहत मिलती है! यह साफ-साफ हम देख नहीं पाते यामिनी को राहत पाने के लिए केवल एक उपाय है इस समय ध्वन्यात्मक संसार से विदाई चाहे वह मृत्यु के रूप में हो, या सन्यास के रूप में इस उपन्यास की ध्वनि यह है कि जीवन का प्रभाव ही भरो से भरा हुआ हो लेकिन जीवन जीना और वह भी समझदारी से जीना उसका प्रथम कर्तव्य है।

सूर्यबाला ने यहाँ स्त्रीवादी भूमिका को नहीं अपनाया है अपने अनुभव की गहराई और व्यापकता पर आंच नहीं आने दी है उसके सामने केवल स्त्री और पुरुष का मन और उनके बीच किसी भी विरोध भाव की बात नहीं है अतः उपन्यास में दो पुरुषों के साथ विवाह और शरीर संबंध के स्वरूप का एक अछूता कोना भी इस उपन्यास में देखने को मिलता है, पर इस कहानी में उसका कोई चिन्ह हमें देखने को नहीं मिलता देखा जाए तो यामिनी कथा उपन्यास एक नारी के सहज जीवन का चित्रण है जिससे सूर्यबाला ने सम्मानित दृष्टि से उपन्यास में उजागर किया है परंतु ऐसा लगता है कि एक निर्मम कलाकार की दृष्टि से उपन्यास में कुछ अधूरा पीछे छूट गया है ।जिसे मुक्त दृष्टि से सूर्यबाला को उजागर करना चाहिए था।

**3.3.1 पात्र**:

सूर्यबाला के उपन्यास की मुख्य नायिका यामिनी है जो पूरे उपन्यास में अपने ही अंतर्द्वंद्व से लड़ाई करती रहती है। सूर्यबाला द्वारा रचित 'यामिनी कथा' उपन्यास में सीमित पात्रों को लिया गया है। सभी पात्र अपना किरदार अंत तक नहीं छोड़ता। उपन्यास के पात्र अपनी-अपनी भूमिकाओ को बड़े ही सहज ढंग से प्रस्तुत  करते हैं।पात्रों की दृष्टि से यह एक सफल और अद्वितीय रचना मानी जाएगी।

**3.3.2 यामिनी:**

संपूर्ण उपन्यास की नायिका यामिनी है। उपन्यास की शुरुआत और अंत भी यामिनी के जीवन को केंद्र स्थान पर रखकर ही किया गया है।यामिनी का विवाह जहाजी विश्वास से हुआ था विश्वास से उसे एक पुत्र की प्राप्ति होती है कैंसर जैसी भयंकर बीमारी से ग्रसित होने के कारण विश्वास की मृत्यु हो जाती है।यामिनी के साथ उसके बेटे को भी आर्थिक मानसिक सहारे की जरूरत होती है. जब यामिनी की मुलाकात बैंक में निखिल से होती है और यामिनी के सामने निखिल उससे विवाह का प्रस्ताव प्रस्तुत करता है .निखिल से विवाह के पश्चात

यामिनी को चुनमुन के रूप में पुत्र प्राप्त होता है विवाह के बाद भी यामिनी के जीवन में परिस्थितियां मानसिक और व्यावहारिक रूप से काफी खराब हो जाती है। वह निखिल, पुतुल ,चुनमुन और विश्वास की स्मृतियों में ही अपने आप को जकड़ा महसूस करती है।उसके निखिल से शादी के बाद उसका ध्यान चुनमुन पर अधिक केंद्रित होता है और उसका प्रथम बेटा पुतुल जैसे ही बड़ा होता है वह अपने पिता की तरह ही जहांजी का पेशा चुनता है और वह घर छोड़कर चला जाता है जिससे हम कह सकते हैं कि यामिनी अंत तक अपने जीवन की उलझनों से उलझी हुई ही रहती है।

### 3.3.3 विश्वास:

यामिनी का प्रथम पति है विश्वास जो जहाजी है उसने अपने जीवन में यामिनी को कभी भी सच्चे मन से स्वीकार नहीं किया था।लेकिन जब वह कैंसर नामक भयानक बीमारी से ग्रसित हो जाता है और जब पुतुल का जन्म होता है उसका ध्यान पुतुल में रम जाता हैं और उसमें से थोड़ा ध्यान और प्यार यामिनी की तरफ भी वह केंद्रित करने लगता है, परंतु नियति को यह अधिक मंजूर नहीं था कैंसर होने की वजह से पुतुल के पिता विश्वास की मृत्यु हो जाती है। यामिनी कथा में विश्वास का पात्र हमारे सामने एक स्वार्थ से भरपूर स्वच्छंद के रूप में सामने आता है। जिसने अपने जीवन में यामिनी को दो पल का भी सुख न दिया ,सिर्फ यामिनी पर ऐसा ना करके अन्याय की किया था।

### 3.3.4 निखिल:

निखिल बैंक में मैनेजर के पद पर कार्यरत है। निखिल से यामिनी की मुलाकात बैंक में होती है और दोनों शादी कर लेते हैं।यामिनी से शादी के पश्चात चुनमुन का जन्म होता है, चुनमुन का बाप बनते हैं निखिल के मन में अपने पराए की भावना जागृत हो जाती है। वह भेदभाव करता है। वह इस उपन्यास में एक स्वार्थी पात्र के रूप में उभर कर हमारे सामने आता है जो न चाहते हुए भी यामिनी पर मानसिक अन्याय ही करता है सूर्यबाला ने निखिल को पहले तो

शांत,संयमी के रूप में प्रस्तुत किया परंतु अंत में आते-आते इस पात्र में स्वार्थ की भावना द्वेष की भावना और यामिनी को मानसिक प्रताड़ित करने की भावना जागृत होती हुई दिखाई देती है और उसका प्रेम भाव जो पुतुल के प्रति पहले था उसमें हमें परिवर्तन देखने को मिलता है वह सिर्फ और सिर्फ यामिनी का संपूर्ण ध्यान अपने बेटे चुनमुन और स्वयं की तरफ ही चाहता है।

**3.3.5 गौण पात्र:**

यामिनी कथा में पुतुल यामिनी की सास, चुनमुन, पार्ष गौण, पात्रों के रूप में उपन्यास में उभरकर आते देखते हैं यह पात्र कथानक को आगे बढ़ाने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। अगर देखा जाए तो उपन्यास के तत्व के आधार पर यह उपन्यास अपने आप को श्रेष्ठ साबित करता है।

**3.3.6 संवाद:**

इस उपन्यास के संवाद प्रभावशाली होने के कारण पाठकों के मानस पटल पर गहरा प्रभाव करते हैं इस उपन्यास का मराठी भाषा में भी अनुवाद किया गया है। यामिनी कथा के संवाद पाठकों में कौतूहल उत्पन्न करते है।उपन्यास पढ़ते हैं तो संवादों के कारण उपन्यास को पढ़ने की और जिज्ञासा जागृत होती है।

विश्वास यामिनी के संवाद देखें'-"क्या नहीं मिल रहा तुम्हें ?"

थरथराते होठों को संभालते मैं संयत स्वर में बोली थी आप सचमुच क्या' नहीं जानते, क्या नहीं दे रहे हैं आप मुझे?' [14]

बीमारी के बाद विश्वास यामिनी से जो संवाद कहता है वह दिल को छू जाता है-

"तुम्हारे पास लौटा भी तो कंगाल बनकर न?"[15]

पुतुल से निखिल संबंधी बात करते हुए '--कि एक व्यक्ति है काफी गंभीर और शालीन जो मुझे और तुम्हें सहारा देने के लिए तैयार है।'

यामिनी अपने आप से अंतर्द्वंद करते समय--"मैं मुक्ति की सांस लेने को छटपटाती  सी मुड़कर देखती हूं निखिल के सहारे के लिए ,लेकिन निखिल कहीं नहीं होता।"[16]

यामिनी अपने आप से बात करते हुए--"अब आ जाओ सब अपने अपने वास्तविक रूप में अब किसी पर किसी अभिनय, किसी कॉन्ट्रैक्ट की लाचारी नहीं, सब अपने हिस्से से जिओ।"[17]

**3.3.7 देशकाल एवं वातावरण:**

सूर्यबाला के उपन्यास 'यामिनी कथा' में सूर्यबाला ने शहरी जीवन एवं महानगरों की संस्कृति को जोड़कर इस उपन्यास को प्रस्तुत किया है। शहरी जीवन शैली का प्रभाव पात्रों पर अधिक देखने को मिलता है।उपन्यास में हर पात्र अपने अपने मतानुसार जीवन यापन करता है देखा जाए तो यह उपन्यास महानगरीय नारी जीवन की संघर्षमय  जीवन शैली और परिवारिक हालातों से लड़ती हुईं एक मानसिक रुप से अपने आप से अंतर्द्वंद  यात्रा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

**3.3.8 भाषा शैली** :

उपन्यास का कथानक शुरुआत से लेकर अंत तक शहरी जीवन से संबंधित है अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग किया गया है देखने को मिलता है क्योंकि पात्र पढ़े लिखे होने के कारण अंग्रेजी भाषा का अधिक मात्रा में प्रयोग किया गया है जो उपन्यास की कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक होती है। उपन्यास में पात्रों की भाषा उपन्यास के अनुरूप ही है जो पाठक के हृदय के साथ सीधा सीधा संबंध बनाने में कामयाब होती है।

**3.3.9 उद्देश्य:**

सूर्यबाला ने एक भारतीय नारी के मन की व्यथा को 'यामिनी कथा' जैसे उपन्यास के माध्यम से प्रकट किया है। नायिका के जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव को क्रमानुसार अंकित किया है। एक तरफ से यामिनी की संघर्षमय जीवन

की गाथा को उपन्यास में अंकित किया है वही विधवा यामिनी की मन की व्यथा पीड़ा का तथा समाज में विधवा के प्रति बर्ताव करने का दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया है।देखा जाए तो तत्वों के आधार पर सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यास 'यामिनी कथा' खरा उतरता है।

### 3.4 दीक्षांत:

ई.सन 1992 में प्रकाशित उपन्यास 'दीक्षांत' में भारतवर्ष में अस्थाई रूप से काम कर रहे अध्यापकों की ज्वलंत और जीवंत समस्या पर केंद्रित है। यह उपन्यास सूर्यबाला द्वारा लिखा गया है सरकार और प्रशासन के बीच उनकी हालत बहुत ही दयनीय हो जाती है मानसिक और शारीरिक धरातल पर कैसे अस्थाई रूप से कार्य कर रहे अध्यापकों का शोषण होता है इसे सूर्यबाला ने अपने अलग ही अंदाज में प्रस्तुत किया है।और इसी प्रश्न को उठाने के लिए सूर्यबाला ने एक ज्वलंत समस्या को वाणी दी है उसके प्रति  अपनी प्रभावशाली आवाज उठाई है।

शिक्षा जैसे व्यापक क्षेत्र में कैसे भ्रष्टाचार ,अविवेक शीलता ने अपने पग पसारे हैं सूर्यबाला ने अपने उपन्यास दीक्षांत में अस्थाई रूप से कार्यरत अध्यापक शर्मा सर के माध्यम से देश के सभी अस्थाई रूप से कार्य कर रहे अध्यापकों की समस्या को उजागर करने का कार्य किया है। कैसे अध्यापकों का आर्थिक और मनोवैज्ञानिक रूप से  समाज के उच्च वर्ग एवं राजनीतिक वर्ग के द्वारा शोषण किया जाता है।इसका ज्वलंत, उद्धरण प्रस्तुत किया है।सूर्यबाला ने पूर्ण रूप से इस उपन्यास में शासन, शोषण करनेवाले बड़े वर्ग का पर्दाफाश किया है।

विद्या भूषण शर्मा सर में'राधिका देवी बिसारिया कॉलेज 'अस्थाई अध्यापक के रूप में कार्यरत है।उन्होंने अध्यापन के लिए सारी शैक्षणिक योग्यता वाली डिग्रियां ले चुके हैं उन्होंने एम.ए पी.एच.डी कर रखा है फिर भी जूनियर कॉलेज में पढ़ाते हैं।उनके पास जब कॉलेज पढ़ाने जाते हैं तो पहनने के लिए अच्छे कपड़े भी नहीं है और इसी कारण छात्र उनका उपहास करते हैं और इस कारण शर्मा

सर की मनोस्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इस संदर्भ में वह किसी से शिकायत भी नहीं कर सकते कि छात्र उन्हें रंगा सियार ,ब्लू जैकल का कमेंट करते हैं। शर्मा सर एक आदर्शवादी अध्यापक है अपनी करते हैं।शर्मा सर पूरी निष्ठा से विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं परंतु अस्थाई होने के कारण उन्हें वेतन कम दिया जाता है। जिससे उनकी और उनके परिवार की जरूरतें भी पूरी नहीं हो सकती। उनके मन में स्थाई होने की जबरदस्त लालसा है सोचते हैं कि अगर सही हो गया तो जिंदगी की सारी समस्याएँ थोड़ी हल हो जाएगी और आराम से जीवनयापन कर सकेंगे फिर वह सोचते हैं कि एक अप्राप्य, अलभ्य , दुर्लभ चीज के लिए अपने अवचेतन मन से बात करते हैं रहते हैं उनका सपना है कि एक बार वह परमानेंट हो जाए शर्मा सर जैसा न जाने कितने लाखों अध्यापकों का यह सपना रहता होगा स्थाई होने के कारण वह अपने परिवार में पत्नी कुंती तथा दोनों बेटे माता-पिता इन सभी का और जिम्मेदारी पूर्ण सुचारू रूप से निभा नहीं पाते। वहीं कॉलेज में अध्यापक का एक ऐसा भी वर्ग है जो आर्थिक और मानसिकता की धरातल पर काफी मजबूत अवस्था में है और किसी कारणवश शर्मा सर अपनी बात को खुलकर नहीं रख पाते इस वजह से वह निराशा में डूबे रहते हैं। इस वजह से वह निराशा को प्राप्त होते हैं हताशा ने उन्हें घेर रखा है।यहाँ तक कि वह अपने दोनों बेटों की फरमाइशो को भी पूरा नहीं कर सकते उनकी पत्नी कुंती फटा हुआ ब्लाउज पहनती है यह अवस्था शर्मा सर की मानसिक अवस्था को बिगाड़ देती है।हमारे बड़े बड़े शिक्षा संस्थानों में आज भी ईमानदार, मेहनती वरीयता प्राप्त कर्तव्य दक्ष अध्यापकों के साथ खिलवाड़ ही किया जाता है। शर्मा सरके पास पद के लिए आवश्यक सारी  डिग्रियां प्राप्त किए हुए हैं, फिर भी उनकी अवस्था दयनीय है और दूसरी तरफ गुप्ता जी है जो एम. ए थर्ड क्लास पास होकर भी उसी विभाग में हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत है और इसी कारण गुप्ता जी शर्मा सर की काबिलियत पर जल भूल जाते हैं ,और शर्मा सर के लिए छात्रों से साजिशें रचने की दुष्परिणाम देते हैं शर्मा सर का अधिक

क्वालीफाईड होना कॉलेज में सबको खटकता है इसी कारण वश शर्मा सर के मन में सदैव अंतर्द्वंद चलता रहता है। रतन नामक छात्र अपनी कार से शर्मा सर पर कीचड़ उछालना है परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त हो सके इसलिए धमकी देता है अस्थाई रूप से कार्यरत अध्यापक कमी कभी कॉलेज की राजनीति में हिस्सा नहीं लेते।वह तो बस अपने काम से काम रखते हैं उनका काम तो बस मान अपमान को सहना आ जाता है और सही भी एक अस्थाई अध्यापक को मान अपमान से क्या लेना देना उसको उसके प्रथम उद्देश्य उसके परिवार का पालन पोषण और जिम्मेदारी से ही भरा रहता है।उन्हें अपने मान अपमान से ज्यादा अपनी रोजी-रोटी की चिंता होती है।यही सोचते हैं कि मान अपमान गंदी पॉलिटिक्स से दूर रहें यही उनके लिए बेहतर उपाय है।

शर्मा सर में आज भी अपने पिता द्वारा दिए गए संस्कार मौजूद है। शर्मा सर हर परिस्थिति का सामना सत्य त्याग निष्ठा के मार्ग पर अपनाकर ही करते हैं जो उन्हें अपने पिता से विरासत एवम संस्कारों में मिले हैं। उसी कॉलेज में अन्य स्थाई अध्यापक भी कार्यरत हैं जिनमें ऐसे गुण ढूंढना "सागर में मोती ढूंढने" के बराबर है उसी तरह अन्य महिला अध्यापिकाए भी है जो सारा दिन नई नई फैशन की ही चर्चा करती रहती है उनमें सादगी देखने को तक नहीं मिलती कॉलेज के मैनेजिंग कमेटी की सदस्य राजनीति में पारंगत है।यहाँ का प्रशासन भी भ्रष्टाचार से अछूता नहीं है उन्हें शर्मा सर जैसे अध्यापकों के दु:ख, दर्द से कोई लेना -देना नहीं है और कॉलेज के ऐसे वातावरण का प्रभाव शर्मा सर पर ऐसा पड़ता है कि शर्मा सर परिवार में अपनी पत्नी कुंती पर अपना विरोध प्रकट करते हैं उनका अपना पूरा व्यक्तित्व मानो इसके कारण लाचार, असहाय, दयनीय और खंडित हो गया है। उन्होंने अपने वजूद को कहीं खो दिया है। कॉलेज की परिस्थितियां उन्हें विध्वंस कर देती है इसी कारण वह अपनी मन की व्यथा,दु:ख किसी को बता नहीं पाते बस इन सारे अत्याचारों को सहते ही चले जाते हैं जैसे अब यही उनकी कुंडली में लिखा हो और सोचते हैं कि उनके जैसे हजारों और लाखों लोग

ऐसे ही है जो बिल्कुल उन की तरह है यह सोच कर अपने दिल को बहला लेते हैं।इस समाज में कौन ऐसा नहीं है जो पढ़ा लिखा हो कर भी B.A, M.A की डिग्रियां लेकर ऑफिस के बाहर झिड़कियां नहीं खाते हैं और सोचते हैं कि क्यों बिना बात का "तिल का पहाड़ बना रहे हैं" वह इस दुनिया में अकेले ऐसे आदमी तो नहीं है जो इन समस्याओं से घिरे हुए हैं। इससे हम इस बात का अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे देश में बेरोजगारी की समस्या ने कितना बड़ा रूप धारण कर लिया है।शर्मा सर अपनी ऐसी स्थिति के प्रति आक्रोश प्रकट करते हैं देखा जाए तो अन्य प्रोफेसर इसी कॉलेज में मुक्त भाव से रहते हैं जबकि शर्मा जी को लगता है कि किसी बड़े बंधन में बँधे हो और मुक्त होना चाहते हो। डॉ शर्मा जिस जीवन की कल्पना करते हैं वह जीवन उनके लिए कल्पना मात्र है उनका जीवन तो आतंक,उपेक्षा ,विद्रूपता से ही भरा पड़ा है क्योंकि वह अपनी ईमानदारी की बलि किसी भी कीमत पर चढ़ा नहीं सकते।उनके पास M.A पीएच.डी की उपाधि होने के पश्चात भी स्नातक स्तर पर अध्यापन कार्य नहीं कर सकते इसका कारण एकमात्र यह है कि वह बरुआ नाम के छात्र को अनुत्तीर्ण कर देते हैं क्योंकि सही में उस छात्र की हिंदी में अच्छे अंक प्राप्त करने की योग्यता नहीं है इसी कारण से डॉक्टर शर्मा को 'राधिका देवी बिसारिया कॉलेज' से निकलवा दिया जाता है और इसके कारण अब डॉक्टर शर्मा के सामने अपने परिवार के पालन-पोषण का प्रश्न खड़ा हो जाता है वह निराश होते हुए अपने आप को ढांढस बंधाते हुए कहते हैं "नहीं! नहीं! नहीं!!! पागल मत बनो विद्या भूषण शर्मा यह तुम्हें एकाएक क्या हो जा रहा है?इतना भय, इतनी दहशत तुमने तो अपनी जिंदगी का हर सबक संघर्ष के बीच ही पढ़ा है,हर कदम पर ठोकरें ही खाई है,सफर के हर रास्ते ने तुम्हारे लिए खाईया ही खोदी है ,लेकिन घबराए थे तुम भी इस तरह।"

यह सोचकर डॉ. शर्मा अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं और पानी में गिर जाते हैं कुछ लोग मिलकर उन्हें अस्पताल पहुंचा देते हैं लेकिन अब वह मानसिक रूप से कमजोर हो जाते हैं उन्हें अपना अतीत याद आता है जब

उनके पिता अध्यापन करवाते थे वह क्षण याद करते हैं करते ही उनकी मृत्यु हो जाती है।

डॉ सुखदेव सिंह दीक्षांत उपन्यास के बारे में अपने मौलिक विचार करते हुए कहते हैं कि -"सूर्यबाला ने शिक्षा संस्कृति की तोहीन को गंभीर करुणा के भीतर सृजित करने का प्रयत्न किया है।" मुझे समझ नहीं आता कि हर समस्या को अपने चुलबुल अंदाज में प्रकट करने वाली सूर्यबाला ने यहाँ पर इतनी निर्दयता क्यों दिखाई है। सूर्यबाला ने इसी करुणा अवसाद को तीव्र अभाव में प्रकट किया है। शर्मा जी की मृत्यु के पश्चात उनका अंतिम संस्कार किया जाता है परंतु उनकी पत्नी कुंती उस कॉलेज में छात्र और छात्राओं को उनके पार्थिव शरीर के पास नहीं आने देती क्योंकि वह समझती है कि इस हालात के लिए अप्रत्यक्ष रूप से यही सब लोग जिम्मेदार हैं। अंत में कुंती अपना सारा सामान भरकर रिक्शे में अपने दो बच्चों के साथ गाँव जाने के लिए निकल पड़ती है। तभी विजेंद्र के पिता वहाँ आकर गुरु दक्षिणा के रूप में विनय और बिल्लू की शिक्षा का सारा भार अपने ऊपर उठा लेते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में सूर्यबाला ने योग्य होकर भी अपनी योग्यता के अनुसार पद पाने वाले अस्थाई रूप से कार्यरत रहे अध्यापक की पीड़ा को व्यक्त किया है। सूर्यबाला ने अपने उपन्यास के माध्यम से यह प्रश्न किया है कि हमारे शिक्षा संस्थान आखिर कब पवित्र मन से कार्य करेंगे? जहाँ अस्थाई रूप से कार्य कर रहे हैं अध्यापकों के दु:ख की कोई सीमा नहीं है। उनकी इस व्यथा को सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य शैली में प्रकट किया है।अध्यापक शिक्षक ही समाज का रचनाकार होता है और उसे अध्यापक के साथ ऐसा दयनीय व्यवहार देखा नहीं जात। अगर शिक्षा संस्थानों में ऐसा ही अस्थाई अध्यापकों के जीवन के साथ खिलवाड़ किया जाएगा तो ऐसे ही कितने डॉ. शर्मा हमें देखने को मिल सकते हैं। जिसको समाज में स्थापित आदर्शों को गहरा सदमा लग सकता है और इसमें आने वाले समय में आने वाली पीढ़ी को यह

संदेश जाता है कि हमारी शिक्षा संस्थाओं में चाह कर भी कोई बदलाव या क्रांति नहीं हो सकती।

दीक्षांत उपन्यास एक ऐसा उपन्यास है जिसमें एक अस्थाई रूप से कार्यरत अध्यापक अपना सारा जीवन स्थाई होने के सपने देखता रहता है परंतु नियति ने उसके इस सपने को अधूरा ही छोड़ दिया और अंत में वह समाज व्यवस्था में चल रहे दुराचार, भ्रष्टाचार, अनीति, नियमों का उल्लंघन, गरीबी, लाचारी, मानसिक अवसाद के कारण अपने जीवन का अंत होते हुए देखता है।

**3.4.1 पात्र परिचय:**

कहानीकार उपन्यासकार सूर्यबाला का 'दीक्षांत' उपन्यास एक प्रसिद्धि प्राप्त उपन्यास है।इस उपन्यास के नायक के रूप में हम डॉ. शर्मा सर को देखते हैं।उपन्यास की नायिका के रूप में हम डॉ. शर्मा सर की पत्नी कुंती को देख सकते हैं ,इन पात्रों के अलावा शर्मा सर के सहयोगी डिसूजा, यादव ,गायतोंडे ,चंद्रभान सिंह, प्रिंसिपल, राजदान,उनकी पत्नी तोशी ,मिसेज सबरीवाला, मिसेज रीना सूरी,मिसेज मोना चौधरी, जया श्रीवास्तव, शर्मा सर के दोनों बेटे विनय और बिल्लू ,शर्मा सर के विद्यार्थी रत्ना, बरुआ ,विजेंद्र ,शशांक ,मनोज यह सभी पात्र उपन्यास में अपना सहयोग प्रदान करते हैं।इसके उपरांत गौण पात्रों के रूप में अपना सहयोगठक्कर और उनके दो बेटों का उल्लेख भी इस उपन्यास में दृष्टिगत होता है।

**3.4.2 डॉ. शर्मा सर:**

उपन्यास का कथानक संपूर्ण डॉ. शर्मा सर के ऊपर ही निर्भर करता है। आरंभ से लेकर अंत तक शर्मा सर ही केंद्र स्थान में रहते हैं ।सूर्यबाला ने डॉ. शर्मा के विविध व्यक्तित्व के रूपों को उपन्यास में प्रकट किया है उनके गगुणों में ईमानदारी ,विनम्रता और ओवरक्वालिफाइड होने का उन्हें अपने संपूर्ण जीवन में कितनी मानसिक पीड़ा को झेलना पड़ता है।कॉलेज में एक अस्थाई अध्यापक के रूप में कार्य करते समय उन्हें उनके सामने आने वाले प्रश्नों को लेखिका ने

उपन्यास में बेहद ही मार्मिक रूप से दर्शाया है कैसेवह शिक्षा जैसे बेहद मान - सम्मान वाले क्षेत्र में भी शोषण के शिकार होते हैं। इस समस्या को सूर्यबाला ने डॉ. शर्मा के जीवन की संघर्ष यात्रा को अंकित करते समय दर्शाया है कैसे संघर्ष करते करते आख़िर में वह अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं और उनका करुण अंत देखने को मिलता है। शिक्षा जैसे पवित्र पेशे में भी व्यक्ति को कितनी यातनाओं  से गुजरना पड़ता है इसका एक ज्वलंत उदाहरण डॉ .शर्मा सर है इस उपन्यास में डॉक्टर शर्मा शर्म के माध्यम से उनके चरित्र के द्वारा सूर्यबाला ने अस्थाई रूप से कार्यरत अध्यापकों की मानसिक पीड़ा, उत्पीड़न, दु:ख और लाचारी का यथार्थ चित्रण सटीक रूप से किया है।

**3.4.3 कुंती:**

'दीक्षांत' उपन्यास में डॉ शर्मा के साथ- साथ अगर कोई मुख्य पात्र है तो वह है कुंती जो डॉक्टर शर्मा सर की अर्धांगिनी है।कुंती का पात्र उपन्यास में ऐसा पात्र है जो अपने पति के  हर मुश्किल समय में साथ देती है। साथ साथ में पारिवारिक जिम्मेदारियां भी बड़ी बखूबी निभाती हैं।। उनकी आर्थिक परिस्थिति अच्छी नहीं होती पर इस बात को वह कभी जाहिर नहीं करती। घरकि सारी जिम्मेदारियां वह बड़े सहज स्वभाव से निभाती है। कभी-कभी डॉक्टर शर्मा अपने काम का गुस्सा या फर्स्ट्रेशन कुंती पर उतार देते हैं फिर भी कुंती कुछ भी ना कह कर यह सब सह लेती है।जबकि कुंती के पास अच्छे वस्त्र सुविधाएं भी नहीं है फिर भी वह डॉक्टर शर्मा की अर्धांगिनी बनकर पारिवारिक सारी समस्याओं को अच्छे हल करती है कुंती और डॉक्टर शर्मा के दो बेटे हैं एक का नाम विनय और दूसरे का बिल्लू सूर्यबाला ने कुंती का पात्र एक प्रखर  गृहस्वामिनीने के रूप में प्रस्तुत किया है जो डॉक्टर शर्मा के निधन के बाद भी बड़े साहस के साथ अपने पति की सारी जिम्मेदारियों को अपने ऊपर लेकर उसे निभाने का प्रयत्न करती है।

**3.4.4 प्रिंसिपल राजदान** :

जिस कॉलेज में डॉक्टर शर्मा अध्यापन का कार्य करते हैं वहाँ राजदान प्रिंसिपल है उन्होंने शिक्षा के मंदिर स्वरूप कॉलेज को राजनीति का अखाड़ा बना दिया है।वह अध्यापकों का साथ देने के बजाय कॉलेज के प्रशासन को सपोर्ट करते हैं और अपना दायित्व स्थापित करते हैं।कॉलेज के अध्यापक गण उनको डरपोक और नपुंसक व्यक्ति के रूप में जानते हैं।सूर्यबाला ने राजदान के पात्र को स्वार्थी, दंभी, कुर्सी की लालसा रखने वाला और एक दूसरे से ईर्ष्या रखने वाले व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है और आज के आधुनिक युग के संदर्भ में यह पात्र पूर्ण रूप से मेल खाता है।

**3.4.5 संवाद:**

सूर्यबाला द्वारा रचित 'दीक्षांत' उपन्यास शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे शोषण का प्रतीक है। जिसका एक वर्ग जीवन के अंतिम क्षण तक संघर्ष करता है, और दूसरा वर्ग लयकात ना होने पर भी सारी सुख सुविधाओं का उपयोग ,उपभोग करता है सही में ऐसा शिक्षा के क्षेत्र में हो रहा है जो निंदा के पात्र हैं। इस उपन्यास के संवाद पाठकों के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं तथा उनके मन को कचोटते हैं।

डॉ शर्मा के मनोभाव के संवाद-"मृत्यु से डरो कभी। वही मनुष्य है कि मनुष्य के लिए मरे।"[18]

जब डॉक्टर शर्मा से कहा जाता है-"आप सेकंड टर्म तक या दो-तीन महीने तक चलाइए उसके बाद अगले सत्र यानी नेक्स्ट ईयर तक ही कहीं और देख लीजिए आपके प्रति मेरे मन में सहानुभूति है,मुझे मालूम है आप सम्मानित आदर्शवादी उसूलों वाले अध्यापक हैं।"[19]

जब डॉक्टर शर्मा सर का देहांत हो जाता है तब समूह के बीच से आवाज आई -"शर्मा सर जिंदाबाद ,शर्मा सर अमर रहे ,कुंती जोर से चीखने लगी और कहने लगी उन्हें वापस लौटाइए!"[20]

रीना सूरी के सैंडलों की ऊंचाई देखकर ऐसा लगता है-"अगर किसी को खुदकुशी करनी है, तो इसके स्कैंडलों से कूदकर आत्महत्या कर ले।"[21]

संक्षिप्त में अगर कहे तो उपन्यास के संवाद भावपूर्ण है। जिसका संबंध सीधा पाठक के मानस पर होता है, जो आधुनिकता के संबंध में जोड़कर संवादों की रचना की गई है। अपने संवादों के कारण यह एक उत्कृष्ट रचना कही जाएगी।

### 3.4.6 देशकाल एवं वातावरण:

इस उपन्यास का कथानक ही देश की शिक्षा नीति, देश की भाषा, संस्कृति, वेशभूषा मानवीय व्यवहार, गरीबी, लाचारी, मानसिक अवसाद पर आधारित है। कथानक का काल ९० के दशक का है। ९० के दशक की शिक्षा नीति को लेकर सूर्यबाला ने उस समय के परिवेश का बखूबी वर्णन किया है। उपन्यास के तत्व को ध्यान में रखते हुए ही सूर्यबाला ने इस उपन्यास के साथ सफल प्रयास किया है।

### 3.4.7 भाषा शैली:

उपन्यास की भाषा सामान्य जनमानस की ही भाषा है। उपन्यास की भाषा शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ी हुई है। उपन्यास में सारे प्रमुख और गौण पात्र पढ़े लिखे होने के कारण कहीं-कहीं पर अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग देखने को मिलता है कहीं-कहीं पर कहावतें, मुहावरे और भाषा के द्वारा समाज को सीख देने वाले वाक्य का भी प्रयोग देखा जा सकता है। इस उपन्यास को पढ़ते समय कहीं-कहीं पर उपन्यास के संवाद मानवीय जीवन के अभाव को प्रकट करते दृष्टीगत होते हैं। इस उपन्यास में सूर्यबाला ने माननीय संवेदनाओं के भाव पक्ष को बड़ी ही सहजता के साथ प्रकट किया है।

### 3.4.8 उद्देश्य:

सूर्यबाला ने अपने उपन्यास 'दीक्षांत' के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार,शोषण, संघर्ष को उजागर किया है शिक्षा के क्षेत्र में स्वार्थी व्यक्तित्व वाले

लोगों की ही भरमार है। जिनकी कोई काबिलियत ना होते हुए भी उच्च पद पर आसीन होकर शिक्षा के क्षेत्र को दूषित और प्रदूषित कर रहे हैं। इसके लिए सूर्यबाला ने डॉक्टर शर्मा की जीवन यात्रा के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे अन्याय, बाजारीकरण, राजनीतिकरण, एकाधिकार, धांधली का पुरजोर विरोध दर्शाया है ।अपने कथानक के माध्यम से सूर्यबाला ने उन लोगों पर करारा प्रहार किया है जो शिक्षा के क्षेत्र में कुरीतियों को फैलाने में लगे हुए हैं।

## 3.5 मेरेसंधिपत्र:

यह सूर्यबाला का हिंदी पत्रिका 'धर्मयुग' में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुआ है।सूर्यबाला ने यह उपन्यास ई.स 1976 में लिखा था ।उपन्यास का प्रथम संस्करण जल्दी खत्म होने के पश्चात 'नेशनल प्रकाशन' ने द्वितीय संस्करण 2003 में प्रकाशित किया। शिवा नाम की नायिका के 'संधिपत्र' है जिसमें शिवा की जीवन यात्रा को सूर्यबाला ने एक कथानक के रूप में प्रस्तुत किया है।

सन 1977 में प्रकाशित 'मेरे संधिपत्र' उपन्यास में मुख्य नायिका शिवा को केंद्र स्थान पर रखकर सूर्यबाला ने यह उपन्यास लिखा है। इस उपन्यास में शिवा का त्याग, उसकी शिष्टता, निरीहता का सूर्यबाला ने अपने संपूर्ण मनोभाव से वर्णन किया है।शिवा का विवाह एक संपन्न परिवार में रायजादा नामक व्यक्ति से होता है जो पहले से ही तीन पुत्रियों का बाप है। शादी के बाद शिवा को यह तीन पुत्रियाँ ऐसे लगता है जैसे विरासत में मिली हों । समाज के उच्च वर्गीय परिवार में शिवा एक द्वितीय माँ के रूप में आती है । आते ही शिवा को कदम- कदम पर समझौते करने पड़ते हैं। इसी वजह से 70 के दशक में 'धर्मयुग' में प्रकाशित होने वाला सूर्यबाला का उपन्यास 'मेरे संधिपत्र' पाठकों के मानस पटल पर एक विशेष छाप छोड़ता है। इसकी नायिका शिवा को लोगों ने बड़े आदर भाव से स्वीकार किया है और इसी वजह से सूर्यबाला अपना एक प्रसंग बताते हुए कहती है- कि "एयरफोर्स का एक अधिकारी शिवा के विषय में कहता है कि अगर शिवा

आपको कभी मिले तो उसे मेरा प्रणाम दीजिएगा।" रायजादा की प्रथम पत्नी की संताने यानी रिंकी, रुचा और रत्ना शिवा पर अपनी जान छिड़कती है ऐसे में उसका पति भी वफादार है वैसे में शिवा किस बात का विरोध प्रकट करें या शिवा अपने पति का इसलिए विरोध करें कि उसका पति विचार और संवेदना के स्तर पर शिवा के मुकाबले हीन है यह हम देख सकते हैं की शिवा का शोषण नहीं हों रहा, तो इस मामले में दोषी किसे ठहराया जाए असमंजस हो रही है क्योंकि इसमें दोषी कौन है? यह स्पष्ट नहीं हो रहा है यह मानसिक लड़ाई और भी गहरी होती जा रही है और त्रासदी भी हमें उपन्यास में रायजादा और शिवा के बीच संबंधों में तनाव देखने को मिलता है

इस उपन्यास में हम पिता और पुत्रियों में 2 पीढ़ियों का अंतर नजर आता है जहाँ शिवा की दृष्टि में जीवन कई संधियों का एक अटूट बंधन है इसके चलते शिवा को अपने जीवन में कई समझौते करने पड़ते हैं थोड़े समय के पश्चात ही शिवा जो तीन पुत्रियों की सौतेली माँ है विधवा हो जाती हैं और इस कारण उसका अकेले जीवन उसको अंदर ही अंदर को कचोटता है जिससे शिवा को भीतर ही भीतर घुटन होने लगती है और इसके चलते उसका मन जो बर्फ का हिम पिंड जैसा था धीरे-धीरे पिघलने लगता है और उसका यह नया रूप नए जीवन की आस में छटपटाने लगता है। पुत्रियों के चले जाने के पश्चात शिवा रत्नेश की तरफ आकर्षित होती है और उसके बाद वह रत्नेश को अपने आप को समर्पित कर देती हैं परंतु विवाह के बंधन में रत्नेश के साथ नहीं बंधती अपनी विडंबनाओं का रोना रोये बगैर किसी शोर के विवेक से शिवा निर्णय लेती है।आदर्श गृहणी के सारे कर्तव्य शिवा निभाती है।पढ़ी-लिखी होने के कारण उसकी सोच में नए विचारों का भी संचार है परंतु अपने पति की मृत्यु के बाद वह अधिकतर उदासी रहती है इसीलिए उस की तीनों बेटियों की इच्छा होती है कि उनकी सौतेली माँ का विवाह रत्नेश माथुर के साथ करा दिया जाए। रत्नेश माथुर भी शिवा को अपनाना चाहता है और वह शिवा को अपनाकर शिवा के सारे दु:ख दूर करना

चाहता है परंतु संस्कृति से ओतप्रोत और समाज में अपनी इज्जत का ख्याल रखने वाली शिवा को यह फैसला मंजूर नहीं है। वह तो सिर्फ अपने पति के बेपनाह प्यार के संस्मरणों की याद में ही अपना सारा जीवन व्यतीत करना चाहती हैं। आधुनिकता के रीति-रिवाजों को निभाते -निभाते वह अपने तीनों बेटियों के लिए माता-पिता दोनों की ही भूमिका निभाती है शिवा अपनी  बेटियों के माता-पिता होने के सारे फर्ज बखूबी अदा करती है।

**3.5.1 पात्र परिचय :**

उपन्यास मेरे संदीप पत्र में स्त्री पात्रों की अधिकता है इसका कथानक उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक स्त्रियों के ही आसपास देखने को मिलता है। उपन्यास में शिवा के अतिरिक्त शिवा की तीन सौतेली बेटियां रिंकी और दूसरी बेटी रुचा  रत्ना है। उपन्यास में रिंकी की दो सहेलियां एक तोशी और दूसरी मुक्ता इसके उपरांत रत्नेश माथुर की पत्नी शैली, रामकली, सेठानी की माँ एवं मात्र कथानक को सहयोग करते हैं।पुरुष पात्रों में देखें तो मिस्टर रायजादा, रत्नेश, माथुर, प्रबोध ,शांतनु ड्राइवर, चरणसिंह, नौकर, केशो, सभी पुरुष पात्र भी कथानक को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

**3.5.2 शिवा:**

शिवा एक पढ़ी-लिखी स्वाभिमानी अपनी जिम्मेदारियों का पालन करने वाली लड़की है। उपन्यास में एक भारतीय सुसंस्कृत नारी के रूप में सूर्यबाला ने शिवा के पात्र को प्रस्तुत किया है।पूरे उपन्यास का केंद्र बिंदु शिवा ही है शिवा अपनी जीवन यात्रा में सारी जिंदगी अपनी सहनशीलता का परिचय देती है तथा परिवार की सारी जिम्मेदारियों को एक आदर्श गृहणी के रूप में संभालती है। अपनी तीनों बेटियों के लिए वह एक आदर्श मा है स्वयं पर अधिक ध्यान न देकर वह सारे परिवार की इच्छाओं को पूर्ण करने में ही अपना धर्म समझती है। आखिर में कहे तो शिवा का घुटन भरा जीवन ही उसे पूरी जिंदगी घुट-घुट के जीने के

लिए मजबूर करता है वह अपनी भावनाओं की जरा भी कदर नहीं करती अपनी सारी भावनाओ, इच्छाओं को हमेशा ही  बड़ी आसानी से नकार देती है।

**3.5.3 रिंकी:**

रिंकी उपन्यास की दूसरी नायिका के रूप में प्रकट होती है। वह स्वभाव से मुंहफट नजर आती है अपनी भावनाओं को बेबाक तरीके से प्रस्तुत करती है और उसे ना पसंद आने वाली बातों का पुरजोर विरोध के साथ खंडन भी करती है। वह शिवा की सौतेली बेटी है उपन्यास के शुरुआत से लेकर अंत तक रिंकी नामक पात्र पाठकों पर अपनी अनूठी छाप छोड़ने में कामयाब रहता है। रिंकी पर हम पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव देख सकते हैं वह फॉरेन में शांतनु से विवाह तय कर लेती है।

**3.5.4 संवाद:**

सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यास के संवाद पाठकों को शुरू से लेकर अंत तक बांधे रखते हैं ।संवाद संक्षिप्त और कुतुहुल निर्माण करने वाले दृष्टिगत होते हैं। जहाँ आवश्यकता लगे वहाँ कहीं--कहीं पर लेखिका ने संवादों का बड़ा बना दिया है।

कुछ संवाद:-"थकना-वकना क्या -सब लक्ष्मी की कृपा है हां और क्या!"

"सामने? सामने वह बोलने का मौका ही कहाँ देती है! सच मानिए ट्रांजिस्टर, रेडियो कुछ भी बजाने की गुंजाइश नहीं रहती।"

"मेरे दिमाग की क्या खाक दवा की गई अंकल?  दवा तो मम्मी की दिमाग की होनी चाहिए थी। जरा सी एक सीधी सी बात इनके दिमाग में नहीं उठा सकते आप लोग।"

शिवा का कथन:-"मेरी पूर्वस्थिति ही मेरे लिए एक अस्त्र हो गई थी। स्थिति के इस अस्त्र के सामने मैं एकदम निहत्थी थी।"

"खुली हवा में खुलकर सांस लेना कोई पाप तो नहीं होता

" उन्होंने वही विश्वास भरी दृष्टि से मेरी ओर उठाई,

"अपने सुख के लिए कुछ करना पाप तो नहीं और..... आपकी तरफ पुण्य आत्मा हर कोई हो ही नहीं सकता।"

**3.5.5 देशकाल अथवा वातावरण** :

"मेरे संधिपत्र' कथानक में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव देखने को मिलता है। देश काल और वातावरण की दृष्टि से उपन्यास खरा उतरता है पात्रों की भाषा रहन-सहन ,पोशाक ,खानपान ,भारतीय संस्कृति के अनुसार ही है पर पात्रों के जीवन पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव कोई हद तक दृष्टिगत होता है उपन्यास में का काल ७० के दशक सकता है

**3.5.6 भाषा शैली:**

उपन्यास के सारे पात्र एजुकेटेड है।जिसकी वजह से भाषा में अंग्रेजी का प्रभाव देखने को मिलता है अंग्रेजी में भी कहीं संवाद दृष्टिगत होते हैं कथा का आरंभ महानगर से ही होता है।महानगरीय भाषा का प्रभाव पात्रों पर देखा जा सकता है।भाषा के माध्यम से सभी पात्र उनके भाव को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने में कामयाब होते हैं। रामकली, किशन और जैसे पात्र अनपढ़ होते हुए भी अपनी बात रखने में कामयाबी हासिल कर सकते हैं भाषा में कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

**3.5.6 उद्देश्य** :

में 'धर्मयुग' प्रकाशित यह सूर्यबाला का प्रथम उपन्यास है। इसका प्रथम संस्करण बहुत ही जल्द खत्म हो गया था जिसके कारण दूसरा संस्करण तुरंत उपलब्ध किया गया धारावाहिक के रूप में प्रस्तुत होने के कारण इस उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक है। उपन्यास की नायिका शिवा के माध्यम से शिवा के जीवन की त्रासदी को पाठकों के समक्ष दृष्टिगत करने का प्रयास हुआ है। सूर्यबाला ने उपन्यास में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का मेल देखने को मिलता है।

उपन्यास की नायिका अपने परिवार में अपने बच्चे पति को अधिक महत्त्व देते हैं।इस कारण वह स्वयं के अस्तित्व को कहीं खो देती है ऐसा दृष्टिगत होता है उसका एकमात्र उद्देश्य परिवार का ध्यान रखना है एक स्वाभिमानी गृहिणी के रूप में शिवा के पात्र के द्वारा सूर्यबाला ने सभी गृहिणियों की समस्याओं को दृष्टिगत किया है। ऐसा मेरा मत है क्योंकि हमारे देश की हर नारी अपने परिवार को केंद्र स्थान पर रखती है। यह सूर्यबाला ने उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

## तृतीय अध्याय

## संदर्भ सूची


1. अग्निपंखी, पृ. 24
2. अग्निपंखी, पृ. 19
3. अग्निपंखी, पृ. 36
4. अग्निपंखी, पृ. 51
5. अग्निपंखी, पृ. 52
6. अग्निपंखी, पृ. 81
7. अग्निपंखी, पृ. 163
8. अग्निपंखी, पृ. 90
9. अग्निपंखी, पृ. 92
10. अग्निपंखी, पृ. 93
11. अग्निपंखी, पृ. 103
12. अग्निपंखी, पृ. 103
13. यामिनी कथा, पृ. 7
14. यामिनीकथा, पृ. 31
15. यामिनीकथा, पृ. 77
16. यामिनी कथा, पृ. 77
17. यामिनी कथा, पृ. 95
18. दीक्षांत, पृ. 38
19. दीक्षांत, पृ. 65
20. दीक्षांत, पृ. 98
21. दीक्षांत, पृ. 76
22. मेरे संधिपत्र, पृ. 45
23. मेरे संधिपत्र, पृ. 96
24. मेरे संधिपत्र, पृ. 103
25. मेरे संधिपत्र, पृ. 104